मूल असमीया पाठ

एकदिना बाल्मीकि उठिया प्रभातत।
स्नान करिबाक प्रति गंगार जलत॥
शिष्य भरद्वाजक बुलिला ऋषिराज।
सत्वरे लैयोक स्नान करिबाक साज॥11

शुनि भरद्वाज साज लैला तेतिक्षणे।
स्नानिबाक लरिला समस्ते ऋषिगणे॥
स्नानिते लागिला ऋषि गंगार जलत।
देखिलंत क्रौंच पक्षी बृक्षर डालत॥12

परम हरिषे पक्षी करय संगम।
ब्याधगोटे आसि पशिलेक येन यम॥
संगम समये दुष्टे पक्षीक हानिल।
देखि बाल्मीकिर महा करुणा मिलिल॥13

महाक्रोधे ब्याधक बुलिला ऋषिराज।
शुनरे अधम कि नो करिलि अकाज॥
संगम करिते पक्षी करिलि संहार।
चिरकाल नरके पचिबि दुराचार॥14

इहलोक दुर्यश थाकिब बर तोर।
मोह हुया कर्म्म तइ करिलि दुर्घोर॥
एहि बुलि मने ऋषि करंत बिषाद।
अकस्माते आसि किनो देखिलो प्रमाद॥15

स्नान करि जलहंते उठि तपोधन।
शिष्य समे करिलंत गृहक गमन॥
घरे आसि बसि मुनि गुणंत मनत।
केनमते बाक्य मोर बजाइल मुखत॥16

चारिपद हुया मोर आसिल बचन।
श्लोक नामे इहाके बुलियो सर्ब्बजन॥
बाल्मीकिर मुखे भैल बचन उत्तम।

हिन्दी अनुवाद

एकदिवस वाल्मीकि प्रातःकाल उठे।
गंगाजल में स्नान करने हेतु चले ॥
शिष्य भरद्वाज से कहते ऋषिराज।
स्नान करने के लिए शीघ्र ले लो साज॥11

सुन भरद्वाज ने लिए साज तत्क्षण।
स्नान करने चले समस्त ऋषिगण॥
गंगाजल में ऋषि स्नान लगे करने।
वृक्ष की डाल पर क्रौंच देखे आपने॥12

परम हर्ष से पक्षी करते संगम।
व्याध एक आ पहुँचा बनकर यम॥
संगम काल में दुष्ट ने पक्षी को मारा।
देखके वाल्मीकि को मिली करुणा महा॥13

महाक्रोध से व्याध से बोले ऋषिराज।
रे अधम तूने किया क्या यह अकाज?
संगम करते पक्षी का किया संहार।
चिरकाल नर्क में सड़ेगा दुराचार॥14

इस लोक में तेरा बड़ा दुर्यश होगा।
मोह में आ तूने दुर्घोर कर्म जो किया।
इस तरह से ऋषि करते विषाद।
अचानक मैंने देखा यह प्रमाद॥15

स्नानोपरांत जल से उठे तपोधन।
शिष्यों सहित किया गृह हेतु गमन॥
घर में आकर मुनि चिंतित से बैठे।
क्या वचन निकला आज मेरे मुँह से॥16

चार पदों में आया है मेरा वचन।
श्लोक मानेंगे भविष्यत में सर्वजन॥
वाल्मीकि के मुँह का वचन है उत्तम।

श्लोक नामे कबिता शुनंते मनोरम॥17	श्लोक नाम की कविता अति मनोरम॥17

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः श्वाश्वतीः समाः।
यत् क्रोंचमिथुनादेकमबधिः काममोहितम्।।

बाल्मीकिर आगत नारदर रामायण कथन	वाल्मीकि के सामने नारद का रामायण कथन
अनंतरे ब्रह्मादेवे सेहि समयत। सर्ब्बलोके हित तेवे चिन्तिया मनत॥ चराचर जगतर कुशल कारणे। रामरूपे अवतार हैबा नारायणे॥18	अनंतर ब्रह्मादेव उसी समय में। सबकी हित चिंता कर रहे मन में॥ चराचर जगत के कुशल कारण। रामरूपी अवतार लेंगे नारायण॥18
बाल्मीकिर मुखे सेइ दिब्य कथामृत। श्लोकबन्धे कराओँ सर्ब्बजनत बिदित॥ ताके शुनि भणि सुखे तरोक संसार। हेन मने गुणि ब्रह्मा करिलंत सार॥19	वाल्मीकि के मुँह का दिव्य कथा अमृत। श्लोकबंध करूँ, हों सर्वजन विदित॥ उसे सुन-कह लोग पार हों संसार। यही समझकर ब्रह्मा ने किया सार॥19
आचंत बाल्मिकी चिन्ति पूर्ब्ब कथामृत। नारदे सहिते ब्रह्मा मिलिल तहित॥ देखिया बाल्मीकि ऋषि उठि तावक्षणे। सुवर्ण आसन आनि दिला रंगमने॥20	वाल्मीकि हैं पूर्व कथामृत चिंता कर। नारद संग ब्रह्मा मिले वहीं जाकर॥ देखकर वाल्मीकि खड़े हुए तत्क्षण। स्वर्ण आसन दिया हुआ हर्षित मन॥20